Shodhsamhita
शोधसंहिता

ISSN No. 2277-7067

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that

प्रो. बी. एल. जैन
विभागाध्यक्ष (शिक्षा विभाग), जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ

For the paper entitled

"नैक के नवीन मानकों के प्रति जागरूकता एवं क्रियान्विति का अध्ययन"

Volume No. VIII, Issue 11 (II), 2021-2022

in

Shodhsamhita

Impact Factor: 4.95

UGC Care Group 1 Journal

Editor-in-Chief

Scanned with OKEN Scanner

SHODHSAMHITA
शोधसंहिता

ISSN 2277-7067
UGC CARE Group 1

"नैक के नवीन मानकों के प्रति जागरूकता एवं क्रियान्विति का अध्ययन"

प्रो. बी. एल. जैन
विभागाध्यक्ष (शिक्षा विभाग), जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ

सुनीता शर्मा
(शोधार्थी)

सार : उच्च शिक्षा में गुणवत्ता बनाए रखने के लिए १९९४ में राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद् (नैक) की स्थापना की गई। जिसका मुख्यालय बैंगलौर में है। यह एक स्वतंत्र निकाय है। जिसे उच्च शिक्षा में गुणवत्ता सुधार के लिए आवश्यक कदम उठाने की स्वतंत्रता है। यह शिक्षा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति की सिफारिशों का परिणाम है। जिसने भारत में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता को बनाए रखने पर विशेष जोर दिया। हमारे राष्ट्र के लिए उच्च शिक्षा में गुणवत्ता स्थापित करना एक चुनौती है। उच्च शिक्षा में गुणवत्ता एवं उत्कृष्टता स्थापित करने में नैक की अति महत्वपूर्ण भूमिका होती है। नैक की भूमिका के आधार पर ही संस्था अपने गुण-अवगुण से परिचित होती है। अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि सभी संस्थाओं को नैक की प्रक्रिया से अवगत कराया जाए और उनमें जागरूकता लाई जाई। जिससे शिक्षण-संस्थानों में गुणात्मक सुधार किया जा सके।

तकनीकी शब्द - नैक, उच्च शिक्षा, जागरूकता, क्रियान्विति

प्रस्तावना

"पौधे खेती से और मनुष्य शिक्षा से आकार लेते है" हम कमजोर पैदा होते है, हमें ताकत चाहिए, हम मुर्ख पैदा हुए हैं हमें न्याय चाहिए। वह सब कुछ जो हमारे जन्म के समय नहीं होता, जिसकी हमें आवश्यकता होती है। वह जब हम बड़े होते है, तो हमें शिक्षा द्वारा दिया जाता है।"

जीन जैम्स, रूसो
एमिल के (शिक्षा दर्शन के अनुसार)

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता का होना अति आवश्यक है, चाहे वह विद्यालय स्तर पर हो, महाविद्यालय स्तर पर हो, चाहे विश्वविद्यालय स्तर पर। क्योंकि वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में वृद्धि तो हुई है। परन्तु वह वृद्धि केवल मात्रात्मक है। गुणात्मक नहीं "शिक्षा की गुणवत्ता" बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय मूल्यांकन व प्रत्यायन परिषद् की स्थापना की गई। जो विभिन्न शिक्षण संस्थानों को बुनियादी ढाँचे, शैक्षिक सुविधाएँ, शैक्षिक उपकरण, शैक्षिक व अशैक्षिक कर्मचारी के आधार पर

Scanned with OKEN Scanner

रैंक प्रदान करती है। यह शोध पत्र नैक के प्रति विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं की जागरूकता का अध्ययन करने का प्रयास करता है।

नैक के नवीन मानक

नैक द्वारा संस्थाओं के प्रत्यायन के लिए सात मानदंड निर्धारित किये गए है। जो कि एक संस्थान के मूल्यांकन व प्रत्यायन के लिए रीढ़ की हड्डी का काम करते है। इन मानदंडों का मुख्य उद्देश्य संस्थान की प्रत्येक गतिविधियों पर सीधा नियंत्रण करके, संस्थान के विकास पर ध्यान देना है। उच्च शिक्षा संस्थान को नैक द्वारा बनाये गये सात मानदंडों के अन्तर्गत आने वाले सभी बिन्दुओं के द्वारा ही एक नई दिशा व पहचान मिलती है। इन मानदण्डों को निम्न चित्र द्वारा बताया गया है।

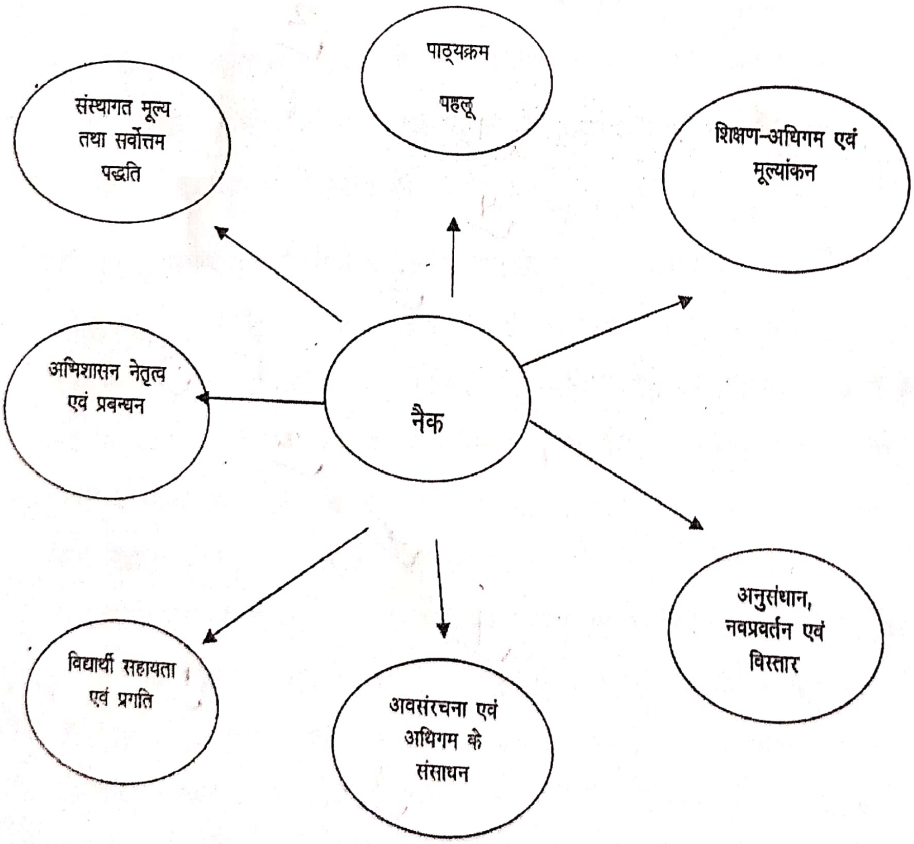

Scanned with OKEN Scanner

नैक की अवधारणा

यह देखा गया है कि जब भी किसी शैक्षणिक संस्थान द्वारा नैक के कार्यों का सम्पादन किया जाता है। बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। नैक की प्रक्रिया बहुत कठिन है। बिना कार्य योजना, प्रभावी प्रबन्धन, निश्चित उद्देश्यों के नैक प्रक्रिया को सफल नहीं बनाया जा सकता, नैक प्रक्रिया निम्न तीन चरणों से गुजरती है-

(प) नैक टीम भ्रमण से पहले

(पप) नैक टीम भ्रमण के दौरान

(पपप) नैक टीम भ्रमण के बाद

नैक प्रक्रिया के अन्तर्गत संस्थान के विभिन्न घटकों (प्रिंसिपल, समन्वयक, शैक्षणिक कर्मचारी, गैर-शैक्षणिक कर्मचारी, विद्यार्थी व पूर्व विद्यार्थियों) की विशेष भूमिका रहती है। अतः इन सभी घटकों को नैक के नवीन मानकों के प्रति सम्पूर्ण जानकारी रखना अति आवश्यक हो जाता है।

१. प्रिंसिपल व समन्वयक की नैक के नवीन मानकों के प्रति जागरूकताः प्रिंसिपल संस्था का प्रधान होता है और समन्वयक नैक समिति का प्रधान होता है। इनकी भूमिका संस्था में महत्वपूर्ण होती है। समन्वयक और प्रिंसिपल के द्वारा ही संस्था के सदस्यों से नैक प्रक्रिया से संबंधित कार्य सम्पन्न कराये जाते है। अतः प्रिंसिपल व समन्वयक को नैक के नवीन मानकों के प्रति सम्पूर्ण जानकारी होना अति आवश्यक हो जाता है।

२. शैक्षणिक कर्मचारियों की नैक के नवीन मानकों के प्रति जागरूकता : प्रबन्धन की अवधारणा के अनुसार कोई भी काम कितना ही बड़ा क्यों न हो टीम वर्क से आसानी से पूरा किया जा सकता है। संस्थान के शैक्षणिक कर्मचारी नैक के उद्देश्यों को समझकर कार्य योजना बनाकर नैक से संबंधित सभी कार्यों को सुव्यवस्थित तरीके से पूरा कर सकते हैं। अतः शैक्षणिक कर्मचारियों को भी नैक के नवीन मानकों के प्रति सम्पूर्ण जानकारी होना अति आवश्यक होता है।

३. गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों की नैक के नवीन मानकों के प्रति जागरूकता : किसी भी संस्थान के लिए उनकी फाइले, दस्तावेज, महत्वपूर्ण होते है। इन सबके रख-रखाव की जिम्मेदारी गैर शैक्षणिक कर्मचारियों की होती है और नैक प्रक्रिया में फाइलों व दस्तावेजों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः गैर शैक्षणिक कर्मचारियों के लिए भी नैक के नवीन मानकों के प्रति जानकारी रखना अति आवश्यक है।

Scanned with OKEN Scanner

४. विद्यार्थियों की नैक के नवीन मानकों के प्रति जागरूकता : छात्र शिक्षण संस्थानों की रीढ़ की हड्डी होते है। नैक प्रक्रिया उन्हीं के विकास के लिए शुरू की गई है। छात्र प्रतिक्रिया के लिए अति आवश्यक है। जो पियर टीम को प्रत्यायन प्रदान करने के संबंध में निर्णय लेने में सहायता करती है। पियर टीम भ्रमण के दौरान छात्रों से मिलती है और उनके द्वारा दी गई प्रतिक्रिया के आधार पर रिपोर्ट तैयार करती है। अतः छात्रों का भी इस प्रतिक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान है तो उन्हें भी इससे संबंधित सभी नियमों व मानदण्डों की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए।

श्य :

१. शिक्षण-संस्थानों व अकादमिक संस्थानों में नैक के नवीन मानकों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
२. शिक्षण-संस्थानों व अकादमिक संस्थानों में नैक के नवीन मानकों के प्रति क्रियान्विति का अध्ययन करना।

रिकल्पनाएँ

१. शिक्षण-संस्थानों व अकादमिक संस्थानों में नैक के नवीन मानकों के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
२. शिक्षण-संस्थानों व अकादमिक संस्थानों में नैक के नवीन मानकों के प्रति क्रियान्विति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।

निष्कर्ष

हमारे राष्ट्र में उच्च शिक्षा प्रणाली का विकास स्वतंत्रता के बाद हुआ है। इसका उद्देश्य मानव गतिविधि के सभी क्षेत्रों की आवश्यकता एवं विकास में योगदान देना है। वैश्वीकरण की प्रतिस्पर्धी दुनिया में जीवित रहने के लिए सभी उच्च शिक्षा संस्थानों को शिक्षा की उच्च गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देना चाहिए। नैक द्वारा इस हेतु अनेक सराहनीय कदम उठाये गए है। भारत के उच्च शिक्षण संस्थानों की बीच गुणवत्तापूर्ण संस्कृति लाने के लिए नैक के आंकलन द्वारा अनेक प्रयास किए गए है। राष्ट्रीय नैक की स्थापना के बाद बड़े पैमाने पर उच्च शिक्षा के समग्र परिदृश्य में परिवर्तन किया गया है।

संदर्भ

१. मया शंकर सिंह, (२००७), अध्यापक शिक्षा : गुणात्मक विकास, प्रथम संस्करण, अध्ययन पब्लिशर्स, दिल्ली।
२. नैक समाचार, (२०१६), नैक के मूल्यांकन व प्रत्यायन प्रक्रिया पर सुधार व बैठक, वॉल्यूम-१६, अंक ०२, जुलाई।
3. shodhganga.inflibnet.ac.in
4. www.naac.gov.in
5. www.ncert.nic.in/publication/journal

Scanned with OKEN Scanner